प्राक्कथन

हिन्दी साहित्य में राष्ट्रीय काव्यधारा अध्ययन व अध्यापन का एक स्थायी विषय है। जिसे न केवल साहित्य प्रेमी पढ़ते हैं, बल्कि राष्ट्र प्रेमी भी इन कविताओं का अध्ययन बड़े ओज के साथ करते हैं। यह राष्ट्रीय काव्य धारा के कवियों व कविताओं के प्रति देश का अतिरिक्त स्नेह है कि उन्हें अन्य की तुलना में अधिक पढ़ा जाता रहा है। चूँकि राष्ट्रीय काव्यधारा भावनाओं का काव्य है। जिसमें राष्ट्रीय भावनाओं की अभिव्यक्ति अपनी पूर्णता पर है। जिस कारण राष्ट्रीय काव्य धारा पर किये गए अध्ययन कार्यों में इसके भावपक्ष पर ही अधिक जोर रहा है और शिल्प-पक्ष गौण ही रहा है या भाव-पक्ष पर किये गए कार्यों के साथ शिल्प-पक्ष पर भी यदा-कदा बातें की जाती रही हैं। इसे देखते हुए मेरा ध्यान राष्ट्रीय कविताओं के शिल्प विधान की ओर गया और मैंने माखनलाल चतुर्वेदी एवं रामधारी सिंह दिनकर की राष्ट्रीय कविताओं का भाषागत अध्ययन करने का मन बनाया।

प्रारंभ में यह कार्य अत्यंत कठिन लग रहा था, किन्तु शोध जिज्ञासा का विषय होता है, और जिज्ञासा मनुष्य से विपरीत से विपरीत

परिस्थियों में भी कठिन से कठिन कार्य करवा लेती है और विपरीत परिस्थितियों में कठिन तपस्या का ही परिणाम मेरा यह शोध कार्य है।

माखनलाल चतुर्वेदी व रामधारी सिंह दिनकर हिन्दी साहित्य में राष्ट्रीय काव्य धारा के सबसे प्रखर व तेज कवि हैं। इनकी भाषा का भी तेवर भी भावानुसार प्रखर व तेज है। इनकी राष्ट्रीय कविताएं न केवल कविताएं है बल्कि, वे राष्ट्र में सोते हुए पौरुष को जगाने वाली कविताएं हैं। उसमें ऊर्जा का संचार करने वाली कविताएं हैं। अपनी खोती या भूलती हुई अस्मिता की याद दिलाने वाली कविताएं हैं।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध को मैंने अध्ययन की सुविधा के लिए पाँच अध्यायों में विभक्त किया है-

प्रथम अध्याय:- राष्ट्र, राष्ट्रीयता एवं काव्यभाषा का स्वरूप एवं उपादान

प्रथम अध्याय को मैंने दो भागों में विभक्त किया है। जिसके प्रथम भाग में राष्ट्र एवं राष्ट्रीयता को स्पष्ट करते हुए 'राष्ट्र' शब्द की व्युत्पत्ति के विषय में भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों के मत को स्पष्ट करते हुए उनके द्वारा दी गई परिभाषाओं को लिखा है। तत्पश्चात राष्ट्र के पोषक तत्त्वों- भौगोलिक एकता, भाषिक एकता, ऐतिहासिक-सांस्कृतिक एकता, धर्म की एकता, आर्थिक हितों की एकता, जातीय एकता, राजनैतिक एकता इत्यादि का महत्त्व बताते हुए वैश्विक एवं राष्ट्रीय स्तर

पर राष्ट्रीयता के विकास को दिखाते हुए हिन्दी साहित्य में राष्ट्रीयता के क्रमिक विकास को दिखाया गया है।

इस अध्याय के दूसरे भाग में मैंने काव्यभाषा के स्वरूप तथा उसके उपादान को लिया है। जिसमें मैंने काव्यभाषा के स्वरूप के अंतर्गत भाषा एवं काव्य (कविता या पद्य) के अध्ययन के साथ काव्यभाषा के दो भेद, काव्य के तत्त्व, काव्य हेतु, काव्य प्रयोजन, काव्य लक्षण, काव्य गुण, काव्य दोष, रस, अलंकार, छंद, ध्वनि-सिद्धांत, शब्द-शक्ति इत्यादि बिंदुओं पर प्रकाश डालते हुए राष्ट्रीय कविता की भाषा के विषय में लिखा है। राष्ट्रीय कविता का स्वरूप राष्ट्र के रूप पर ही आधारित होता है। राष्ट्रीय काव्य में समग्र राष्ट्र की चेतना प्रस्फुटित होती है। राष्ट्रीय भावना राष्ट्र की प्रगति का मंत्र है। राष्ट्रीय चेतना को झकझोरने वाला काव्य जनमानस को आंदोलित कर नैतिक मूल्यों को स्थापित करने का साहस भरता है। उन मूल्यों को महत्त्व देने के लिए प्रेरित करता है जिनमें हिंसा, घृणा को नकारकर एक उन्मुक्त वातावरण तैयार किया जा सके और जिसमें सभी धर्म निश्चिंत होकर साँस ले सकें और राष्ट्र अपने विकास के चहुमुखी मार्ग पर प्रशस्त हो। यदि प्रत्येक राष्ट्रधर्मी काव्य अपने समाज के अंदर ऐसा व्यापक उदात्त भाव और रचनात्मक संस्कार उत्पन्न कर सके, तो निश्चय ही ऐसा काव्य मानव कल्याण के लिए होगा अर्थात् राष्ट्रीय काव्य मानवतावादी काव्य ही है। अंत में मैंने कवि

के व्यक्तित्त्व का उसकी भाषा के साथ संबंध का विवेचन करते हुए अध्याय को पूर्ण किया है।

द्वितीय अध्याय:- माखनलाल चतुर्वेदी तथा रामधारी सिंह दिनकर के काव्य में युगीन परिस्थितियाँ एवं राष्ट्रीय स्वर

द्वितीय अध्याय में माखनलाल चतुर्वेदी तथा रामधारी सिंह दिनकर की युगीन परिस्थितियों का वर्णन करते हुए राष्ट्रीय काव्य और राष्ट्रीय कवि के विषय में लिखा है। तत्कालीन युगीन परिस्थितियों को देखते हुए दोनों कवियों द्वारा रचित राष्ट्रीय स्वर से संबंधित कविताएं प्रस्तुत की हैं।

तृतीय अध्याय:- माखनलाल चतुर्वेदी का व्यक्तित्त्व एवं कृतित्त्व

तृतीय अध्याय में मैंने माखनलाल चतुर्वेदी जी के सम्पूर्ण जीवन उनके जन्म से लेकर उनकी साहित्यिक यात्रा इन सभी को उजागर करने का पूर्ण प्रयत्न किया है। इस अध्याय को भी मैंने दो खंडों में विभाजित किया है। प्रथम में मैंने माखनलाल चतुर्वेदी जी के जन्म और पारिवारिक जीवन का परिचय देते हुए, उनके बाल्यकाल की शरारतों, नटखटपन आदि प्रवृतियों, शिक्षा-दीक्षा के संबंध में लिखा है। तत्पश्चात माखनलाल चतुर्वेदी जी का स्वतंत्रता संघर्ष में योगदान, व्यवसाय तथा भारत सरकार

द्वारा मिले सम्मानों और पुरस्कारों इत्यादि की चर्चा करते हुए अंत में मैंने माखनलाल चतुर्वेदी जी के समग्र व्यक्तित्त्व का मूल्यांकन किया है।

इसके अतिरिक्त द्वितीय खंड में मैंने माखनलाल चतुर्वेदी जी के साहित्य सृजन की प्रवृत्ति पर विशद रूप से प्रकाश डाला है और कवि के समग्र कृतित्त्व पर चर्चा की है, जिसमें गद्य, पद्य, निबंध, भाषण, संस्मरण, नाटक, कहानी, सम्पादन को भी शामिल किया है।

चतुर्थ अध्याय:- रामधारी सिंह दिनकर का व्यक्तित्त्व एवं कृतित्त्व

चतुर्थ अध्याय में रामधारी सिंह दिनकर जी के सम्पूर्ण जीवन तथा उनकी साहित्यिक यात्रा का विस्तार से विवेचन किया गया है। इस अध्याय को भी मैंने तृतीय अध्याय की भांति दो खंडों में विभाजित किया है। जिसके प्रथम खंड में मैंने, रामधारी सिंह दिनकर जी के जन्म और पारिवारिक जीवन का परिचय देते हुए उनके बालपन प्रवृतियों एवं विद्यार्थी जीवन, शिक्षा-दीक्षा आदि के संबंध में लिखा है। तत्पश्चात रामधारी सिंह दिनकर जी का स्वतंत्रता संघर्ष में योगदान, व्यवसाय तथा भारत सरकार द्वारा मिले सम्मानों और पुरस्कारों पर भी चर्चा की है। व्यक्तित्त्व के अंत में मैंने रामधारी सिंह दिनकर जी के समग्र व्यक्तित्त्व का मूल्यांकन किया है।

इसके अतिरिक्त द्वितीय खंड में मैंने रामधारी सिंह दिनकर जी के साहित्य सृजन की प्रवृत्ति पर प्रकाश डाला है। इसी क्रम में दूसरे खंड में कवि के समग्र कृतित्व पर चर्चा की है, जिसमें कवि की काव्य रचनाओं और गद्य रचनाओं के बारे में लिखा है।

पंचम अध्याय :- माखनलाल चतुर्वेदी तथा रामधारी सिंह दिनकर की राष्ट्रीय कविताओं की भाषा

साहित्य की किसी भी विधा में शिल्प का महत्वपूर्ण स्थान है चाहे वह कविता, कहानी, नाटक, निबंध, रेखाचित्र, संस्मरण, आत्मकथा, जीवनी, रिपोर्ताज, यात्रा-साहित्य कुछ भी क्यों न हो। साहित्य में शिल्प ही वह माध्यम है जो उसे नियोजित करता है। साहित्य सदैव शिल्प से बंधा हुआ होता है एवं शिल्प साहित्य से।

भाषा शैली के अंतर्गत माखनलाल चतुर्वेदी और रामधारी सिंह दिनकर की कविताओं में प्रयुक्त भाषा, शब्द-शक्ति, चित्रात्मकता, ध्वन्यात्मकता, कल्पनात्मकता, भावात्मकता, काव्य-गुण, शब्द-समूह, मुहावरे और लोकोक्तियाँ आदि की चर्चा करते हुए दोनों कवियों के व्यक्तित्त्व का उनकी भाषा के साथ संबंध के बारे में लिखा है।

इस शोध कार्य के प्रत्येक अध्याय का अपना वैशिष्ट्य एवं महत्त्व है। शोध कार्य की संपूर्णता व पूर्णता उसकी उपादेयता में ही सन्निहित

होती है। इस बात को ध्यान में रखकर मैंने अपने शोध विषय के प्रत्येक पक्ष को गहराई के साथ विवेचित करने की कोशिश की है।

उपसंहार- अंत में उपसंहार स्वरूप मैंने "राष्ट्रीय कविता का भाषागत अध्ययन: माखनलाल चतुर्वेदी तथा रामधारी सिंह दिनकर के विशेष संदर्भ में" संबंधी मान्यताओं एवं स्थापनाओं को प्रतिपादित करने का विनम्र प्रयास किया है।

उपसंहार के पश्चात संदर्भ ग्रंथ सूची को प्रस्तुत किया गया है। जिसके अंतर्गत आधार ग्रंथ, सहायक ग्रंथ, कोश ग्रंथ, पत्र-पत्रिकाओं एवं वेबसाइट का विवरण दिया है।

सरल एवं उदार, मौलिक चिंतन से परिपूर्ण ज्ञान के समुद्र, परम आदरणीय शोध निर्देशक डॉ. अनीता शुक्ल जी के श्री चरणों में उनके स्नेह व वात्सल्य के साथ यह कठिन साधना मैं सम्पन्न कर सकी। जिसके लिए ज्ञान की साधिका आदरणीय गुरु माँ के प्रति आभार व्यक्त करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं। गुरु माँ का स्नेह व आशीर्वाद मेरे ऊपर सदैव बना रहे ऐसी कामना करती हूँ।

आभार व्यक्त करती हूँ, पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो. दक्षा मिस्त्री का जिनके कार्यकाल में शोध विषय का चयन हुआ तथा वर्तमान हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो. कल्पना गवली का, जिनके कार्यकाल में शोध कार्य शोध-प्रबंध के रूप में प्रस्तुत हुआ। हिन्दी विभाग के सभी अध्यापक एवं

अध्यापिकाओं के प्रति मैं कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ जिनका सहयोग मुझे प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से मिलता रहा। संस्कृत विभाग के प्रो. रवींद्र पंडा जी का भी मैं धन्यवाद करती हूँ, जिनका मार्गदर्शन एवं आशीर्वाद मुझे अपनी इस शोध-यात्रा में मिला।

विश्वविद्यालय के अधिकारियों, कर्मचारियों, परीक्षा विभाग और कला संकाय, महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, जिनके माध्यम से यह कार्य सम्पन्न हो पाया; इन सभी का मैं सहृदय से आभार व्यक्त करती हूँ। जिनका समय-समय पर पूर्ण सहयोग मुझे मिला।

माता-पिता तथा सास-ससुर के आशीर्वाद व सहयोग के बिना यह दुष्कर कार्य कभी संभव न होता। किन्तु उनका असीमित स्नेह, वात्सल्य व सहयोग मुझे ऊर्जा व प्रेरणा प्रदान करता रहा। जिनकी वजह से मैं यह पुनीत कार्य कर पाई। उनका स्नेह व वात्सल्य हम पर बना रहे।

मैं अपने प्रेरणा स्रोत सुयोग्य जीवनसाथी श्री केतन प्रजापति की आजीवन ऋणी रहूँगी। उन्होंने समयाभाव और विषम परिस्थितियों के होते हुए भी मुझे संघर्षरत रहने, हिम्मत न हारने तथा कठिनाइयों पर विजय पाने की प्रेरणा देकर इस कार्य को पूर्ण करने में अपना अतुलनीय सहयोग दिया। साथ ही मेरे प्रेमवाटिका में प्रफुल्लित एवं प्रमुदित बेटे शिवांश को आशीष व प्यार देती हूँ। जिसने अपनी बालसुलभ चेष्टाओं व चंचलताओं द्वारा वातावरण खुशहाल बनाए रखा।

महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय के पुस्तकालय एवं दिल्ली विश्वविद्यालय के केन्द्रीय पुस्तकालय, केन्द्रीय पुस्तकालय मांडवी (बड़ौदा), ऑफलाइन लाइब्रेरी अकोटा(बड़ौदा) इन सभी के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ, जिनकी मेरी इस शोध यात्रा में महत्त्वपूर्ण भूमिका रही तथा जहां से मुझे दुर्लभ शोध सामग्री प्राप्त हुई।

मैं ईश्वर को धन्यवाद देते हुए अपने सभी शुभचिंतकों, गुरुजनों, सहयोगियों एवं परिजनों के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ, जिन्होंने मुझे निरंतर आगे बढ़ते रहने की प्रेरणा दी।

अंततः राष्ट्रीय कविता का भाषागत अध्ययन शोध-प्रबंध सुधी पाठकों व विद्वतजनों के समक्ष अपनी सीमाओं के साथ प्रस्तुत है।

सुमन कुमारी

सितंबर 2022